पाठ- 6 : गद्य कैसे पढ़ें

सारांश

- सामान्य बोल चाल की भाषा को गद्य कहते हैं। इस पाठ में गद्ध के विभिन्न रूपों का उलेख किया गया हे तथा गद्ध की विकास यात्रा में परिचित कराया गया है।
- फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के बाद से गद्य को और अधिक प्रश्रय मिला। साहित्य के स्तर पर गद्य का पहली बार भारतेंदु हरिश्चंद्र के काल में विकास हुआ।
- गद्य में निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा, संस्मरण, व्यंग्य, संपादकीय आदि विधाओं की रचना होती है। विषय, समय और परिस्थिति के अनुसार इनकी भाषा बदल जाती है।
- गद्य को पढ़ते समय उसके विचार तत्त्व, भाषा तथा शैली पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

मुख्य बातें

- जिस भाषा का प्रयोग हम साधारण बातचीत में करते हैं, वही गद्य है।
- इसका लक्ष्य सहज तथा सरल ढंग से अपने प्रयोजन को अभिव्यक्त करना है।
- साहित्य या लेखन में काव्य के बाद इसका प्रयोग शुरू हुआ।
- गद्य की भाषा सरल, स्पष्ट होती है और समझना आसान होता है लेकिन व्यवस्थित रूप से पढ़ना आवश्यक।
- गुणों का विकास गद्य के माध्यम से तथा भाषा विकास और चिंतन विकास भी।
- गद्य की सबसे सरल, व्यापक और सर्वमान्य परिभाषा यही हो सकती है कि जिस भाषा का हम साधारण बातचीत में प्रयोग करते हैं, वही गद्य है। गद्य का लक्ष्य सहज तथा सरल ढंग से अपने प्रयोजन की अभिव्यक्ति करना होता है।'

हिंदी गद्य का विकास -

- सन 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद
- लल्लूजी लाल,सदल मिश्र, सदा सुखलाल, इंशाल्ला खां ने किताबें गद्य में लिखीं
- धार्मिक संस्थाएं - ब्रह्म समाज तथा आर्य समाज

पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

- हिंदी साहित्य को उसके विकास के क्रमानुसार चार कालों में विभाजित किया गया है

- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल।
- आधुनिक युग में हिंदी गद्य का विकास -भारतेंदु युग से लेकर अबतक
- गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएं :
- कथा साहित्य, नाटक, निबंध, नवीन विधाएं - यात्रा-वृतांत, संस्मरण, सम्पादकीय, व्यंग्य आदि।

गद्य के अवयव या तत्व : विचारतत्त्व

- किसी भी गद्य रचना में विचार तत्त्व प्रधान होता है। चाहे वह निबंध हो, कहानी हो
- अथवा उपन्यास या संपादकीय। इस विचार तत्त्व का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि रचना के रचनाकार के बारे में परिचय प्राप्त किया जाए तथा वह किस काल का रचनाकार है उस काल की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए क्यों कि समय तथा सामाजिक परिवेश के अनुसार ही विचार बनते हैं। फिर उस रचना के पीछे रचनाकार का क्या उद्देश्य है, उसे जान लिया जाए।

भाषा

- यह विचारों की संवाहि का होती है। जैसे विचार होंगे वैसी भाषा भी हो जाएगी। इसके अलावा भाषा विषय-वस्तु के चुनाव पर भी निर्भर करती है। विषय और वस्तु जिस काल, परिवेश और स्थितियों पर आधारित होते हैं भाषा भी उसी के अनुरूप ढलती चली जाती है।

शैली

- गद्य रचना में शैली का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक ही विषय पर अलग-अलग रचनाकारों द्वारा लिखी गई बातें औरशैली अलग होने के कारण अलग-अलग रूप में प्रभावित करती हैं।

गद्य पढ़ते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- पढ़ने से पूर्व पुस्तक की भूमिका तथा परिचय अवश्य पढ़ लें, यदि सारांश दिया गया हो तो उसे भी पढ़ें इससे विषय को पढ़ने में सहायता मिलती है।
- पहले और अंतिम अनुच्छेदों को ध्यान पूर्वक पढ़ें, क्यों कि इसमें मुख्य बातों का निचोड़ दिया जाता है।
- पढ़ते समय विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए रुक-रुक कर पढ़ें।
- उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिए, नहीं तो कई बार अर्थ बदल जाते हैं। संवादों को ठीक ढंग से बोलने का प्रयास करें, नहीं तो अर्थ बदल जाता है।
- पढ़ते समय बीच-बीच में रुक-रुक कर सोचें नहीं, अन्यथा क्रम बिगड़ जाता है और विषय समझ में नहीं आता| इसलिए तेज़-तेज़ पढ़ने की आदत डालें।

अपठित गद्य कैसे पढ़ें

- पढ़ने की गति
- चिंतन-मनन
- विचारों का बोध
- अन्तर्निहित उद्देश्यों को समझना
- शब्दकोश देखने की आदत डालना

अपना मूल्यांकन करें

- गद्य पढने में किन चार बिन्दुओं को आप महत्वपूर्ण मानते हैं?वर्णन कीजिए।
- 'निबंध गद्य लेखन की कसौटी है।' सिद्ध कीजिए।
- अपठित गद्य पठन के चरणों को उदाहरण सहित चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत कीजिए।
- 'व्यंग्य आज के परिवेश में एक सशक्त विधा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्क प्रस्तुत कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

- गद्य की कौन-कौन सी मुख्य विशेषताएं होती हैं? आप उनमें से सबसे महत्वपूर्ण किसे मानते हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।
- गद्य की अनेक शैलियाँ भिन्न-भिन्न विशेषताओं से युक्त हैं। उदाहरण के साथ विवेचन कीजिए।
- 'निबंध गद्य लेखन की कसौटी है।' सिद्ध कीजिए।
- अपठित गद्य पठन के चरणों को उदाहरण सहित चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत कीजिए।
- व्यंग्य आज के परिवेश में एक सशक्त विधा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्क प्रस्तुत कीजिए।